सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

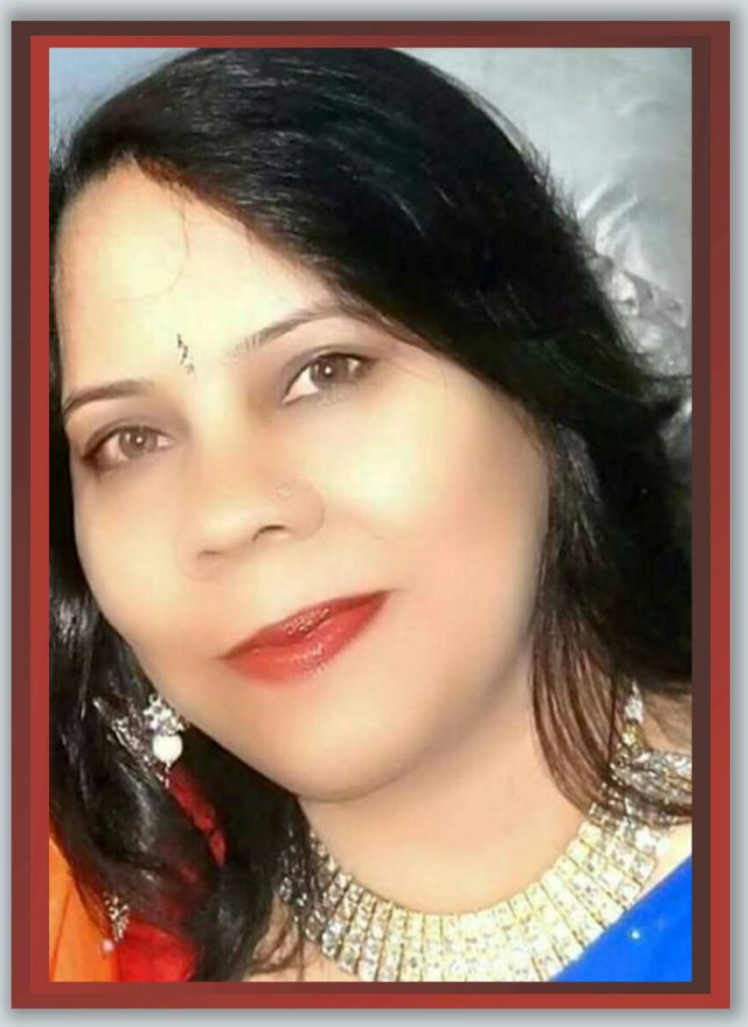

केन्द्रीय रचनाकार

• किरण मिश्रा

सृजक-सृजन-समीक्षा

किरण मिश्रा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

किरण मिश्रा का परिचय

नाम- किरण मिश्रा

जन्म -28मार्च -फैजाबाद उ).प्र.(

शिक्षा.एड .संस्कृत बी.ए.एम-,NET उत्तीर्ण

व्यवसाय-पूर्व आकाशवाणी उद्घोषिका, वर्तमान में गृहसंचालिका

प्रकाशन-:

1-झाँकता चाँद (हाइकु संग्रह)2-हायकु की सुगंध (साझा हाइकु संग्रह) 2017 3-कस्तूरी की तलाश (विश्व की प्रथम रेगा संग्रह)4-तांका की महक (सांझा ताँका संग्रह)5-हाइकु मंजूषा (साझा हाइकु संग्रह) साँझा काव्य संग्रह 6-संदल सुगंध , 7-नव काव्यांजलि , 8-गुलनार, 9-आखर, 10-अनुभूति, 11-मृगनयना 12- अविरल धारा 13-उजास 14-अभिव्यक्ति 15-साहित्य उदय 16-अपूर्वा 17-अनुबंध 18-भारत के युवा कवि एवम् कवियत्रियाँ 19-नारी सागर 20-अपना शान है तिरंगा 21-कस्तूरी की तलाश (समीक्षा पत्रक)

भारत देश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में नियमित रचनायें प्रकाशित .. हिन्दी सागर,राजस्थान पत्रिका, लोकजंग,(मध्य प्रदेश सौरभ ((राजस्थान)दर्शन, दैनिक मैट्रो, (नोयडा यूनवभारत (पी., टू मीडिया, टू टाइम्स, अमर उजाला नोयडा,(उत्तर प्रदेश नवप्रदेश (,वर्तमान अंकुर तथा विभिन्न(दिल्ली)प्रयुक्ति.. ई पत्र पत्रिकाओं -, अंतरा शब्द शक्ति, साहित्यपीडिया, कागज दिलकाम., अमर उजाला में नियमित रचनायें प्रकाशित !

सम्मान:

1-"हायकू मंजूषा रत्न सम्मान वर्ष "2017
2-"श्रेष्ठ हिन्दी कवयित्री सम्मान-विश्व हिन्दी रचनाकार मंच) "2017)
3-"काव्य सागर सम्मान"2017 (साहित्यसागर (
4-"श्रेष्ठ युवा रचनाकार सम्मान"2018 (विश्व हिन्दी रचनाकार मंच (
5-"नारी सागर सम्मान 2018 (विश्व हिंदी रचनाकार मंच(
6-"साहित्य के दमकते दीप साहित्यकार सम्मान "2017
7--मात्सुओ बासो कलम की सुगन्ध सम्मान ,
8-सर्वोत्कृष्ठ कलम की सुगंध सम्मान 2017-18(अर्णव कलश एसोसिएसन)
9-भाषा सारथी सम्मान2018 (मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा (
10-"अंतरा शब्दशक्ति सम्मान "2018 (अंतरा शब्दशक्ति द्वारा(

आत्मकथ्य

मैं किरण मिश्रा, मेरा जन्म भगवान राम की नगरी अयोध्या में (फैजाबाद) !मेरी प्रारम्भिक और उच्च शिक्षा फैजाबाद उत्तर प्रदेश में हुई !हुआ बचपन से ही साहित्य पढ़ने और लिखने का शौक रहा फलस्वरूप संस्कृत ! साहित्य से परास्नातक,बी,एड .और नेट परीक्षात्मक उत्तीर्ण की. आकाशवाणी फैजाबाद में कुछ सालों तक एंकरिग का पद संचालन.एम.एफ में गृहसंचालिका का पद (नोयडा)सीआर.वर्तमान में दिल्ली एन !किया सम्हाल रहीं हूँ
मेरे शौक लेखनप-ाठन, चित्रकारी, गृहसज्जा, हस्त शिल्प, पाक कला आदि हैं वो भी!लिखना मुझे बेहद पसन्द है"कवितायें -श्रृंगारिक प्रेम" ! मेरी ज्यादातर कविताओं में वो किसी ना किसी ...भगवान श्री कृष्णा पर से:मेरा मानना है कविता भावना है और वो अन्त!रूप में मौजूद हैं प्रस्फुटित होती है !शब्द सिर्फ उसकी अभिव्यक्ति के माध्यम मात्र हैं ... देश के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में मेरी नियमित रचनायें प्रकाशित होती !हैं

किरण मिश्रा, नोयडा

"सृजक का सृजन"

ठूँठ

जानती तो थी...यारा
तुम सिर्फ वृक्ष हो..... .
इक कदम भी ..
न चल सकोगे मेरे साथ....
स्थिरता तो
तुम्हारा नैसर्गिक गुण है.....
तुम पुरूष जो ठहरे..
और मैं ठहरी बहती नदी.....
जिसे सींचना है....
पखारना है पाँव....
बार बार तुम्हारा...
क्योंकि तुम तो
मेरे पूज्य हो ..
मैं तुम्हारे प्रेम में जो हूँ..
तुम्हारी वन्दना करती हूँ....
तुम्हें चाहती हूँ...
क्योंकि मैं जानती हूँ ...
मेरे प्रेमरस से सिक्त होकर ही
तुम सीना ताने खड़े हो....
मेरी स्नेहिल बूँदों से .
सिक्त हुये बगैर .....
तुममें जीवन कहाँ...??
प्रिय...
ये तुम्हारी
शीतल छाँव ...
जिस पर तुम इतराते हो....
लहराते हो..अह्रनिशि,
बंजर हो जायेगी.....
हाँ यही सच है.....
मेरा प्रेम ही...
तुम्हारी जड़े..
तुम्हारी बुनियाद है....
मेरा गर्भ गृह ही ...
तुम्हारे जीवन की नींव
और....
ये निर्विवाद सत्य...
"मेरे प्रेम" के बिना
तुम "ठूँठ हो सिर्फ ठूँठ..... !!""

जिन्दगी

ज़िन्दगी..
तुझे पढ़ ...सुकून भी
मिलता है...
चुभन भी.... जलन भी.....
ज़िन्दगी....तू कभी धूप ...
तो कभी छाँव सी.....

कभी.....
सर्दी की मटियाली धूप
तो कभी....
जेठ दुपहरी में
झुलसाती आग सी...

कभी .....
इठलाती नदिया सी...चंचल
तो कभी बलखाती
शोख शीतल पुरवा बयार सी.....

कभी ..
टूटी फूटी...
गाँव की कोई कंटक ..
पगडण्डी ..सी लगी...
तो कभी....
फिसलती पहाडों की
सर्पीली.. राह सी...
कभी... दर्द से भरी
कोई कारी बदली.....
तो कभी रिमझिम
सावन की फुहार सी.....

कभी बज उठती
मन मन्दिर में .....
प्रेम की आरती....
शंखनाद सी.....

तो कभी महके
किसी मस्जिद...
में लिखी खूबसूरत
आयत...अजान सी.....

तुझे देखूँ... तुझे पढ़ूँ... ..
तुझे महसूस करूँ....
फिर भी तू मेरी नहीं....

ज़िन्दगी....
तू मेरे हिस्से में क्यों आई.....
बस....लाइब्रेरी में रक्खी
किताबों की दुकान सी..!!"

तुम कौन हो

मैंने लिखना चाहा..तुम्हें,.तुम कौन हो.

भोर के उगते सूरज हो
या रात के महकते चाँद....
ओस में भीगा गुलाब
या चाँदनी की बारात.....
प्रेम हो, पुण्य हो,सत्य ,शिव,
रमजान,या रिमझिम बरसात.....

मेरे अहसास हो
या मेरे अल्फ़ाज.....
अलियों के गान हो
या चटकती-कलियों की शान....
शब्द हो,सुगन्ध हो,पुष्प-मकरन्द
या मेरे गीतों के मधु-छन्द.....

दर्द हो,दवा हो
इबादत या खुदा ....
करीब का अहसास हो
या फिर जुदा.....
नींद हो, खुमार हो,या शीतल-बयार
सर्दी की मीठी धूप हो
या तरूवर की छाँव....

मुहब्बत में भीगे गीत हो
या रूमानी ग़ज़ल....
मेरे नयनों के दीप या
मेरी जीवन के खूबसूरत पल.....
मय हो,मयखाना हो,या मुकम्मल
मेरे अधरों की प्यास.....

राधा के कृष्ण हो
या मीरा के श्याम.....
शबरी के बेर या
सीता के राम.....
जिस्म हो,जान हो,स्वप्न हो,स्पन्दन
या मेरीे रूह में बसे प्राण.....

मौन हो, मर्यादा हो
मधुवन या मधुमास.....
मेरे मन के सुकोमल-भाव
हो या केवट की नाव.....
हौसला हो,जीवन हो,श्रद्धा
या अहिल्या की आस.....

पर पता है .....
सबसे अच्छा क्या लिखा....
शब्दों को अधरों पर रखकर
अब दिल का भेद क्यों खोलूँ....
तुम आँखों से सुन सकते हो....
तो आँखों से ही, क्यूँ न बोलूँ....!!!"

मैं जिद्दी हूँ

तुम कहते थे ना
यारा.
मैं जिद्दी हूँ..
हाँ मैं बहुत जिद्दी
हूँ...
तुम्हें चाहना
मेरी इबादत है....
तो मैं हार क्यूँ मानूँ
.
भला
पूजा से अर्चना
से भी कोई हारता
है..
माना तुम पत्थर
हो..
प्रभु.
पर पत्थर
से भी आस रखती
हूँ...
क्योंकि मैं तो
इन्सान हूँ...
पाप क्या..पुण्य
क्या..
सही क्या.गलत
क्या..
ये तो तुम जानो.....
इसका लेखा-जोखा...
तो तुम रखते हो...
मैं तो इक आम
इन्सान हूँ...
भावना से भरी....
आँकाक्षाओं से
उबलती.....
सरल, विह्वल,
कलकल बहती इक
संतप्त नदी सी.....
हर किनारे पर
तुम्हारी तलाश ,
तुममें ही
सिमटने की चाह
लिये....
वक्त के थपेड़ों को
सहकर भी
बाँहें फैला देती हूँ....
जरा हथेंलियों को
बढ़ा...
छूकर तो देखो.
मेरी इन उत्ताल
तरंगों को...
मचलती हैं
इनमें सिर्फ
तुम्हारे प्यार की
सरगोशियाँ...
यारा...मैं हारी
नहीं....
हारूँगीं भी नहीं...
कभी देखा है क्या....
राधा की आस ....को
हारते .....
या मीरा ...के
विश्वास को टूटते
कितने भी विष
के प्याले पी जाऊँ ..
सब अमृत.....
क्यूँकि मुझमें
रचा बसा है मीरा
का
विश्वास....
मैं लिखती हूँ ...
राधा की आस.....
जिसका टूटना...
तुम्हारे अस्तित्व का
बिखर जाना...
और मैं ठहरी
तुम्हारे ही अस्तित्व
की परछाईं.....
देखना तुम
इक दिन....
मुस्कुरा उठूँगीं मैं ...
तुम्हारे होंठों पर....
सुबह की
सुनहली धूप सी..
किरण सी
झिलमिलाउँगीं ...
तुम्हारी आँखों में ..
शीतल पुरवाई सी ..
बिखर जाउँगी ..
तुम्हारे मृदुल गातों
पर.....
क्यूँकि मैं जिद्दी हूँ
यारा.....
मैं हार नहीं
मानूँगी.....!!""

तस्वीर

तुम्हारी तस्वीर...
टाँग दी है ..मैंने....
मन की.... खूँटी पर.....
झाड़ती हूँ..
पोंछती हूँ... रोज... तुम्हें

इन्तजार की ..
नम आँखों से ..गीला...कर.....
जिससे तुम्हारे रंग रूप में और...
निखार आ जाये और मेरा प्यार
कभी धूमिल... ना पड़े....

तुम महको....
खिलो गुलाब से..
मैं काँटो सी
टहनियाँ लिये...
गर्व से खड़ी रहूँ...

तुम्हारे साथ....तुम्हारी बन
तुम्हारी फिकर...में
बस इतना ही साथ
काफी है... तुम्हारा....
बोलो मंजूर है ना.....यारा

लुटेरा

दिल जब घुटने टेक देता है...
तब लिखी जाती है....
कुछ प्रेम-तहरीरें....
समय के उड़ते पन्नों पर
ज़िन्दगी की
पूर्ण वसीयत के साथ ...

रिश्तों और
भावनाओं के ....
चक्रवृद्धि ..ब्याज के संग..
ज़िन्दगी बेहद खुशनुमा ...
हो उठती है.....

या फिर
रिसने लगता हैं...
जज्बातों का कर्ज ताउम्र...
मायूस ज़िन्दगी के
बही खाते से...

ये इश्क़, मोहोब्बत, प्यार...
लूट लेता है..
मन का सुकून...
दिल का चैन..
धड़कनों का संगीत....
और बदले में देता है....

कुछ
बदहवास-साँसें...
बेचैन-रातें....
बोझिल-पलकें...
क्योंकि....प्रेम..सिर्फ लुटेरा....है !!"

राधा कृष्णा"(दोहावली)

आया फागुन प्रीत का,राधा सा मन होय!
तन झूमे मधु मालती, संग श्याम जो होय!!

दिल ड्योढ़ी दोनो सजे,सजती गोकुल नारि!
रास रचाते गोविन्द,राधा रूप निहारि !!

छम छम नाचे राधिका,कान्हा आये द्वार !
अधरों पर धर बंसरी,अद्भुत रूप निहार!!

श्याम बाँसुरी प्रीत की ,भीगा गोकुल गाँव!
प्रेम रस पगी राधिके ,भूलीं अपना भान!!

राधे गगरी प्रीत की,जमुना तट भर लीनि !
कान्हा मारे कंकरी, सुधि-बुधि सब हरि लीनि!!

मन ही मन अनुराग है,मन ही मन में प्रीत.!
मन ही मन राधा हँसीं,बन बैठे मन मीत..!!

दृग उलझे मन बावरा, मन की अद्भुत-रीत.!.
मन ही तुमको हारता,मन से ही मन जीत..!!

मन पूजा मन आरती ,मन दीपक मन थाल!
मन में कान्हा रम रहे ,मैं तो हुई निहाल..!!

दर्प त्याग शीतल हुआ,समझा मन जग रीति!
प्रेम द्वार की पालकी, कान्हा जी की प्रीति!!

हायकु

लफ़्ज घुले
भावनायें मचली
कविता बही!

ज़िन्दगी धूप
यायावर सा मन
ढूँढता चाँद!

कागज कश्ती
लाद रहा ख़्वाहिशे ..
कोई पागल!

मन पतंग
छूने को मचलती
ख्वाहिंशे चाँद!

मन के झूले
कर्म के पेंग बढ़ा
नभ को छूले!

जीवन कैदी
भटक रही रूह
तन पिजंरे!

इन्द्रधनुषी
मन आकाश उगीं
यादें तुम्हारी!

तांका

आदमी रेल
जिन्दगीं दो पटरी
उम्मीदे भीड़!
बढ़ता चल,आगे
ख़्वाहिशों का स्टेशन !

काटते वृक्ष
तड़पता पखेरू
ग्रीष्म के दिन
अरेस्वार्थी मानव !
कहाँ बनाये नीड़ !

स्वप्न के बीज
उगाती कल्पनायें
नींद की कोख
उम्मीदों की कलियाँ
खिलें भोर गलियाँ!

अन्तस जल
अकुलाता बादल
प्रीति उड़ेले
सिक्त हुआ जीवन
धरा!मेह मिलन-

ख्वाब प्रतीक
कल्पनायें निमित्त
बाँचते नैन,
मधुर स्वप्न पलें,
रैन पलकों तले !

सृजन की समीक्षा

1.

सबसे पहले तो आदरणीय किरण मिश्रा जी को मेरा सादर प्रणाम
आपकी पहली रचना **"ठूंठ"** स्त्री के प्रेम का पुरुष के जीवन में महत्त्व को दर्शाती है
दसरी रचना **"जिंदगी"** -कभी धूप तो कभी छाँव सच में बेहद पसंद आई
तीसरी रचना शब्दों को अधरों पर रखकर दिल का भेद न "तुम कौन हो"- खोलं,वाह बहत ही सुंदर
चौथी रचना- **"मैं जिद्दी हूं"** मैं हार नहीं मानूंगी,बहुत ही सकारात्मक सोच को दर्शाती
पाँचवी रचना-**तस्वीर** बेहद भावपूर्ण मन को छू लेने वाली है
छठवीं रचना **लटेरा** प्रेम सिर्फ लटेरे है,सच तो है लेकिन इसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं
सातवीं रचना**"दोहावली" राधा कृष्ण"**- और आठवीं रचना-**हाइकु और ताका** बहत सन्दर रचना है।
आपकी लेखनी यूँ ही चलती रहे मेरी ढेर सारी शुभकामनायें हैं।

मीना विवेक जैन

2.

कोमल भावनाओं की कवियत्री सहज उच्छवास जैसे हम लेते हैं बिल्कुल उसी तरह अपनी बात को कहती हईं----
ठँठबहत संवेदनशील कविता।----
अपनी उपमा बहती हई नदी से जो सतत प्रवाहमान है और प्रेमी एक अचल वक्ष की भांति स्थिर।वह यह भी कहती हैं यदि मैं तम्हें सतत नहीं सींचती तो तम ठँठ बन जाते।अभी तुम्हें अपनी घनी छाया का घमंड है वह वस्तुतः मेरी ही।देन है।
जिन्दगी एक गतिशील जीवन में कुछ सुखद अनुभूतियां तो कुछ कड़वे--- अनभव भीसम्मिलित होते हैं।
मेरा जीवन एक लाइब्रेरी की तरह है जिसमें किताबें सजी हुई है इच्छा होने पर कोई पढ़ लेता है वरना वह वैसी ही सजी रह जाती हैं।
तम कौनकिरण जी की हर रचना प्रिय तम कौन जीवन का गहनतम स्पर्श--- जो मन को छू लेता है मोर की शान तिरंगा मन को सुखद अनुभूति प्रदान करती तुम्हारी यादें यह तुम्हारा एहसास।

कभी तम सीता के राम तो कभी मीरा के श्याम से ही लगते हो पर मैं भी तो **जिददी हं** बिखर जाउंगी शबनम की तरह तुम्हारे गातों पर हार नहीं मानंगी। यह रचना अदभत है। **बधाई ।**

तस्वीर मन की खंटी पर प्रिय की तस्वीर जग से छपा कर रखी गई है-- **-** जिसे रोज रोज साफ करके देखते हैं क्या आप इतना अधिकार है मुझे तुमसे प्यार करने का। बहत संदर ।

लटेरा--- प्रेम मन पर इस कदर हावी होता है किस दिन का चयन और रातों की नींद सब लट लेता है जज्बात जब बेकाबू होते हैं तो कविता में लिखने लगते हैं बहत ही संदर रचना।

राधा-(दोहावली) कष्ण-राधा कष्ण का प्रेम आकाश का विस्तार है तो समद्र की गहराई और किरण जी बताती हैं अपने दोनों में किस तरह राधा कष्ण के रंग में डबी हई है। इस दुनिया में प्रेम तो केवल राधा को ही मिला है। बहत संदर दोहे हैं ।

हायक-- हाइक वह कविता है कम में अधिक बोल देना।
जिंदगी चलती है और उसमें यात्रा का साक्षी मन।
कागज की कश्ती ढोती है कितनी इच्छाओं का भार।
मन पतंग सा उस चाँद को छना चाहता है। संदर कल्पना।
अपनी शक्ति से अधिक पाना ही मानव को कवि की श्रेणी प्रदान करता है।
जीवन समाज का बंधक मश्किल है आजाद होना।वाह वाह

इन्द्रधनषब ---रखा के बाद स्वच्छ आकाश और उस पर निर्मित इन्द्रधनुष जैसे इनके बीच उभरता प्रिय का बिम्बविलक्षण--

तांका--जीवन रेल की पटरियों पर चल रहा। हर स्टेशन पर रूकता सा अर्थात हर इच्छा नागफनी सी उभरती हई । पर्यावरण को समर्पित यह रचना पेड काटता मनष्य अपने स्वार्थ के लिए। पक्षी कहाँ बसेरा करेगा। निर्मम मानव। बहत संदर जब इच्छा परी नहीं होती तो स्वप्न देखते हैं ।
प्रिय के लिए उमडता बादल। गिरती बरखा। मिलन धरा से।
बहत से सपने पलकों की निधि होते हैं ।किरण जी का भाव विलक्षण है। रचना कशलता से ओतप्रोत हैं ।हर रचना कुछ सोचने को प्ररित करती है। आपको शुभकामनाएँ और **बधाई ।**

डॉराजलक्ष्मी शिवहरे .

3.

आज की रचनाकार किरण जी को बहतबहत- बधाई ।

आप की सभी रचनाएं बेहतरीन ,एक बहती हई नदिया से प्रतीत होती हैं। उत्कृष्ट शब्द संयोजन एवं संदर भाव लिए सभी रचनाएं पाठक के मानस पर विशेष छाप छोडती हैंठंठ आप की पहली रचना- **ठंठ** नारी और परुष के वजद को दर्शाती हईसच कहा आपने परुष नारी के प्रेम के बिना ठंठ ही तो है । ... **जिंदगी-** लाइब्रेरी में रखी किताबों की दकान से वाह बहत बढिया दर्शन। तम कौन हो क्या बात कही है आंखों से सुन सकते हो तो आंखों से ही क्यों- ना बोलं बहत खबसरत भाव

मैं जिददी हं- राधा की आस और मीरा का विश्वास बहत गहरी बात कही है, परमात्मा के प्रति प्रेम और अपनी जिद का संदर समावेश ।

तस्वीर- साथी के लिए लिखी गई भावनाएं पोंछती हूँ रोज तुम्हें इंतजार की नम आंखो आंखों से गीला कर...

लटेरा--लटेरे प्रेम की परिभाषा। वाहवाह ।-

राधा कष्ण दोहावलीसभी दोहे राधा कृष्ण के प्रेम में पगे हुए । -

हायक-ताँका--बहत बढिया।

आपको पढ़ना दिल को सुकून देता है ।बहतबहत शुभकामनाएं ।-

कीर्ति प्रदीप वर्मा

4.

किरण जी की रचनाएँ आज पटल पर पढने को मिली ।

इनकी कविताएं अच्छी लगी । **कहीं न कहीं मन को झिंझोडती हैं ।** "ठंठ" कविता के माध्यम से इन्होंने बताया है कि स्त्री का प्यार बहती नदी के समान है । **मैं अगर नहीं हँ, तम्हारा कोई वजद नहीं है** । कविता "जिन्दगी" तम" ज़िन्दगी के कई रंग समेटे हए है । कौन हो में भावनाओं के उदगार " अपने मन के एहसासों " मैं जिददी हँ" उमडते दिख रहे हैं अच्छी कविता है । खँटी पर टांग कर इबादत खब किया "तस्वीर" को शब्द देने की कोशिश है । इस रचना के माध्यम से ।**प्रेम सिर्फ लटेरा है कहीं न कहीं सच ही है ये चैन, आराम, सकन सब लट लेता है** । राधा कृष्णा अच्छे दोहे हैं । हायकु और ताँका भी प्रभावशील हैं ।

लेखनी चमकती रहे। बहतबहत शुभकामनाएँ आपको किरण जी ।-

अनिता मंदिलवार सपना

5.

प्रिय किरण जी, बहत समय से आपकी रचनाओं का आस्वादन कर रही हूँ, सूर्य की किरणों के समान चारों ओर उजियारा फैलाती हैं आपकी रचनाएँ, बेहद संतुलित और उत्कृष्ट सृजन होता है आपका।

पहली रचना **ठँठ परुष का अस्तित्व नारी के बिना महत्वहीन है**, जिस प्रकार पानी के बिना पेड मात्र एक ठूँठ, अपने प्रेम से सिंचित कर , उष्णता देती है ताकि नर सीना तान कर खड़ा रहे और परिवार उसकी छत्रछाया में रहे। बेहतरीन अभिव्यक्ति।

दसरी रचना **जिन्दगी, धप, छाँव , बदलते मौसम, सख दःख से भरी जिन्दगी**, कभी प्रेम की फ़हार, कभी महकती हई सी जिन्दगी, मेरी न होकर मेरे हिस्से में क्यों आई जिन्दगी, वाह वाह वाह, लाइब्रेरी में रखी किताब सी, उफ़। बेहतरीन सजन किरण जी।

तीसरी रचना **तम कौन हो जीवन के सत्य को तलाशती है** यह रचना, प्रतीक्षा, प्रेम, मर्यादा, स्वप्न, पेड की छाँव, दर्द, दवा, पण्य, सत्य, शिव सभी में खोज रही है कवयित्री और लिखना चाहती है अपने अहसास को। लेकिन शब्दों के बजाय वह आँखों से ही कहना चाहती है अपने जस्बात, बहत खब।

चौथी रचना **मैं जिददी हँ बेहद संवेदनशील हृदय की अभिव्यक्ति** , बहत ही उत्कृष्ट सृजन है। पायल की झंकार है, नदी सा प्रवाह है, चाँद की शीतलता है, फ़लों की महक है, ठंडी हवा के झोंके हैं , कल मिलाकर बेहतरीन रचना।

पाँचवी रचना तस्वीर, ग़ज़ब की अतकान्त रचना, और अंत में यारा, हर पंक्ति लाजवाब, अदभत ,अदवितीय बहत खब।

छठी रचना **लटेरा, लाजवाब,** जस्बातों का कर्ज, मायस जिन्दगी के बहीखाते-, प्रेम सिर्फ लटेरा है , क्या बात है , बेहतरीन सजन के लिए हार्दिक **बधाई।**

सातवीं रचना रा**धा कष्ण दोहावली, हर दोहा सात्विक प्रेम की पराकाष्ठा,** निर्मल, मनोरम भाव , बहत सन्दर अभिव्यक्ति।

आठवीं रचना, **हाइकु, मन, विषय पर आधारित सार्थक सृजन** और विधा के साथ पर्ण न्याय।

नवीं रचना, **ताँका विधा के साथ शानदार प्रयोग,** हर ताँका अपने आप में पर्ण। हार्दिक **बधाई** किरण जी। आप नित नए आयाम स्थापित करें , ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है, **मंगलकामनाएँ ।**

पिंकी परुथी "अनामिका"

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com